Journal of Research and Development
A Multidisciplinary International Level Referred and Double Blind Peer Reviewed, Open Access
ISSN : 2230-9578 | Website: https://jrdrvb.org Volume-18, Issue-3(A)| March-2026

Original Article

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन

अवधेश कुमार शर्मा[1] डॉ. डी. के. शुक्ला [2]
[1]शोधार्थी शिक्षा शास्त्र विभाग, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)
[2]शोध निर्देशक प्राचार्य, विन्ध्य कॉलेज ऑफ़ एजुकेशन, पन्ना रोड शेरगंज, सतना (म.प्र.)

Manuscript ID:
JRD -2026-180321
ISSN: 2230-9578
Volume 18
Issue 3(A)
Pp. 107-113
March- 2026
Submitted: 15 Feb. 2026
Revised: 25 Feb. 2026
Accepted: 15 Mar. 2026
Published: 31 Mar. 2026

सारांश

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनके शैक्षिक विकास, व्यक्तित्व निर्माण तथा भविष्य की संभावनाओं को गहराई से प्रभावित करता है। सामाजिक-आर्थिक स्तर में परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा संसाधनों की उपलब्धता जैसे महत्वपूर्ण घटक शामिल होते हैं। जिन विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है, उन्हें बेहतर शैक्षिक संसाधन, अनुकूल वातावरण और अतिरिक्त अवसर प्राप्त होते हैं, जबकि निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को कई प्रकार की शैक्षिक तथा सामाजिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों के जीवन का एक महत्वपूर्ण चरण होता है, क्योंकि इसी समय उनके करियर, उच्च शिक्षा तथा व्यक्तित्व विकास की नींव रखी जाती है। सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ इस स्तर पर विद्यार्थियों की उपलब्धियों, प्रेरणा, आत्म-विश्वास और शैक्षिक सहभागिता को प्रभावित करती हैं। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों को प्रायः संसाधनों की कमी, पारिवारिक जिम्मेदारियों तथा अवसरों के अभाव के कारण कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है।

मुख्यशब्द- उच्च माध्यमिक स्तर, सामाजिक-आर्थिक स्तर, सामाजिक प्रतिष्ठा, शैक्षिक संसाधन

प्रस्तावना

शिक्षा किसी भी समाज के विकास का महत्वपूर्ण आधार होती है। यह केवल ज्ञान प्रदान करने का माध्यम ही नहीं है, बल्कि व्यक्ति के सामाजिक, मानसिक, नैतिक और आर्थिक विकास का भी प्रमुख साधन है। शिक्षा के माध्यम से व्यक्ति अपने जीवन को बेहतर बनाने के साथ-साथ समाज के विकास में भी योगदान देता है। किंतु शिक्षा की उपलब्धता और उसका प्रभाव सभी विद्यार्थियों के लिए समान नहीं होता। इसके पीछे कई सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक कारक कार्य करते हैं, जिनमें से सामाजिक-आर्थिक स्तर एक अत्यंत महत्वपूर्ण कारक है। सामाजिक-आर्थिक स्तर से आशय उस स्थिति से है जो किसी व्यक्ति या परिवार को समाज में उनकी आय, शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा के आधार पर प्राप्त होती है। यह स्तर व्यक्ति के जीवन के विभिन्न क्षेत्रों को प्रभावित करता है, विशेषकर शिक्षा के क्षेत्र में इसका प्रभाव अत्यंत महत्वपूर्ण होता है।

जिन परिवारों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है, उनके बच्चों को बेहतर विद्यालय, आधुनिक शिक्षण सामग्री, तकनीकी संसाधन, कोचिंग सुविधाएँ और सकारात्मक शैक्षिक वातावरण प्राप्त होता है।इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों के बच्चों को इन सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ प्रभावित हो सकती हैं। उच्च माध्यमिक स्तर शिक्षा का वह चरण है जहाँ विद्यार्थियों के बौद्धिक विकास, करियर चयन और उच्च शिक्षा की दिशा निर्धारित होती है।

Creative Commons (CC BY-NC-SA 4.0)
This is an open access journal, and articles are distributed under the terms of the Creative Commons Attribution-NonCommercial-ShareAlike 4.0 International Public License, which allows others to remix, tweak, and build upon the work noncommercially, as long as appropriate credit is given and the new creations ae licensed under the idential terms.

Address for correspondence:
अवधेश कुमार शर्मा शोधार्थी शिक्षा शास्त्र विभाग अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.)

How to cite this article:
शर्मा, . अवधेश. कुमार., & शुक्ला, . डी. के. (2026). *उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक- आर्थिक स्तर का अध्ययन. Journal of Research & Development, 18(3(A)), 107–113.*
https://doi.org/10.5281/zenodo.19630511

Quick Response Code:
Website:
https://jrdrvb.org/
DOI:
10.5281/zenodo.19630511

इस स्तर पर विद्यार्थी अपने भविष्य के बारे में गंभीरता से सोचने लगते हैं और विभिन्न शैक्षिक एवं व्यावसायिक विकल्पों का चयन करते हैं। इसलिए इस स्तर पर उपलब्ध शैक्षिक अवसर और संसाधन विद्यार्थियों के भविष्य को काफी हद तक प्रभावित करते हैं। यदि किसी विद्यार्थी का सामाजिक-आर्थिक स्तर अच्छा है, तो वह अपनी शिक्षा को बेहतर ढंग से आगे बढ़ा सकता है। इसके विपरीत आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों के विद्यार्थियों को अक्सर पढ़ाई के साथ-साथ पारिवारिक जिम्मेदारियों का भी निर्वहन करना पड़ता है, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो सकती है। सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, प्रेरणा, आत्म-विश्वास और सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करता है। जिन विद्यार्थियों को परिवार और समाज से पर्याप्त समर्थन मिलता है, वे अधिक आत्म-विश्वास के साथ अध्ययन करते हैं और उनकी उपलब्धियाँ भी बेहतर होती हैं। वहीं जिन विद्यार्थियों को आर्थिक या सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनमें कभी-कभी आत्म-विश्वास की कमी, पढ़ाई में रुचि की कमी तथा शैक्षिक उपलब्धियों में गिरावट देखने को मिलती है।

आज के समय में शिक्षा के क्षेत्र में समान अवसर प्रदान करने की बात पर विशेष बल दिया जा रहा है। सरकार द्वारा विभिन्न योजनाओं और कार्यक्रमों के माध्यम से आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों को सहायता प्रदान करने का प्रयास किया जा रहा है, जैसे छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, मध्याह्न भोजन योजना तथा अन्य शैक्षिक सहायता कार्यक्रम। इन योजनाओं का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण किसी भी विद्यार्थी को शिक्षा से वंचित न होना पड़े। फिर भी वास्तविकता यह है कि सामाजिक-आर्थिक असमानताएँ आज भी शिक्षा के क्षेत्र में स्पष्ट रूप से दिखाई देती हैं। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच संसाधनों की असमानता, निजी और सरकारी विद्यालयों के बीच अंतर तथा परिवारों की आर्थिक स्थिति के कारण विद्यार्थियों के शैक्षिक अवसरों में भिन्नता देखने को मिलती है। इन परिस्थितियों में यह आवश्यक हो जाता है कि उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का अध्ययन किया जाए, ताकि यह समझा जा सके कि यह कारक उनकी शिक्षा और व्यक्तित्व विकास को किस प्रकार प्रभावित करता है। इस अध्ययन का मुख्य उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर का विश्लेषण करना है। इसके साथ ही यह भी जानने का प्रयास किया जाएगा कि सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि, अध्ययन की आदतों, प्रेरणा और सामाजिक समायोजन को किस प्रकार प्रभावित करता है। इस प्रकार का अध्ययन शिक्षा के क्षेत्र में नीतिगत सुधारों के लिए महत्वपूर्ण आधार प्रदान कर सकता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर की अवधारणा

सामाजिक-आर्थिक स्तर किसी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को दर्शाने वाला एक महत्वपूर्ण संकेतक है। यह समाज में व्यक्ति की स्थिति, प्रतिष्ठा तथा जीवन स्तर को निर्धारित करता है। सामान्यतः सामाजिक-आर्थिक स्तर का निर्धारण तीन प्रमुख तत्वों आय, शिक्षा और व्यवसाय के आधार पर किया जाता है। इन तीनों कारकों का सम्मिलित प्रभाव व्यक्ति के जीवन के विभिन्न पहलुओं, विशेष रूप से शिक्षा, स्वास्थ्य, जीवन शैली तथा सामाजिक संबंधों पर पड़ता है। सामाजिक-आर्थिक स्तर की अवधारणा समाजशास्त्र और शिक्षा के क्षेत्र में अत्यंत महत्वपूर्ण मानी जाती है। समाज में प्रत्येक व्यक्ति की सामाजिक स्थिति समान नहीं होती, बल्कि यह उसकी आर्थिक क्षमता, शैक्षिक उपलब्धि और पेशे के आधार पर अलग-अलग होती है। जिन व्यक्तियों या परिवारों की आय अधिक होती है, जिनके पास उच्च शिक्षा और प्रतिष्ठित व्यवसाय होता है, उनका सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च माना जाता है। इसके विपरीत जिन परिवारों की आय कम होती है, शिक्षा का स्तर कम होता है और जिनके पास स्थायी या प्रतिष्ठित रोजगार नहीं होता, उनका सामाजिक-आर्थिक स्तर निम्न माना जाता है।

शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक स्तर का विशेष महत्व है क्योंकि यह विद्यार्थियों के शैक्षिक अवसरों, संसाधनों और उपलब्धियों को प्रभावित करता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवार अपने बच्चों को बेहतर विद्यालय, आधुनिक शिक्षण सामग्री, तकनीकी साधन, कोचिंग और अनुकूल शैक्षिक वातावरण प्रदान कर सकते हैं। इससे विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बेहतर अवसर मिलते हैं और उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ भी सामान्यतः अधिक होती हैं। दूसरी ओर निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों के बच्चों को अक्सर संसाधनों की कमी, आर्थिक दबाव तथा पारिवारिक जिम्मेदारियों का सामना करना पड़ता है, जिससे उनकी पढ़ाई प्रभावित हो सकती है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर केवल आर्थिक स्थिति तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें सामाजिक और सांस्कृतिक पहलू भी शामिल होते हैं। उदाहरण के लिए, माता-पिता की शिक्षा का स्तर, उनके सामाजिक संबंध, सांस्कृतिक मूल्यों और बच्चों के प्रति उनकी शैक्षिक अपेक्षाएँ भी विद्यार्थियों के विकास को प्रभावित करती हैं। जिन परिवारों में शिक्षा को अधिक महत्व दिया जाता है, वहाँ के बच्चे सामान्यतः शिक्षा के प्रति अधिक प्रेरित होते हैं और उनकी शैक्षिक प्रगति बेहतर होती है। इसके अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास, आत्म-विश्वास, सामाजिक व्यवहार तथा भविष्य की आकांक्षाओं को भी प्रभावित करता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले

विद्यार्थियों को विभिन्न गतिविधियों, प्रतियोगिताओं और शैक्षिक अवसरों में भाग लेने का अधिक अवसर मिलता है, जिससे उनका समग्र विकास होता है। वहीं निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को कई बार इन अवसरों से वंचित रहना पड़ता है।

वर्तमान समय में शिक्षा में समानता और समावेशन पर विशेष बल दिया जा रहा है। सरकार तथा विभिन्न संस्थाओं द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा सामग्री, मध्याह्न भोजन योजना और अन्य सहायता कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। इन प्रयासों का उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि सामाजिक-आर्थिक असमानताओं के कारण किसी भी विद्यार्थी की शिक्षा बाधित न हो। अतः सामाजिक-आर्थिक स्तर व्यक्ति और समाज दोनों के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यह न केवल व्यक्ति की सामाजिक स्थिति को निर्धारित करता है, बल्कि उसके शैक्षिक अवसरों, जीवन स्तर और भविष्य की संभावनाओं को भी प्रभावित करता है। इसलिए शिक्षा के क्षेत्र में सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करना अत्यंत आवश्यक है, ताकि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्राप्त हो सकें और वे अपनी पूर्ण क्षमता का विकास कर सकें।

उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा का महत्व

उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा किसी भी विद्यार्थी के शैक्षिक जीवन का अत्यंत महत्वपूर्ण चरण होती है। यह वह अवस्था है जहाँ विद्यार्थी प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षा के आधार पर आगे की उच्च शिक्षा और व्यावसायिक जीवन की दिशा निर्धारित करते हैं। सामान्यतः उच्च माध्यमिक शिक्षा कक्षा 11 और 12 को सम्मिलित करती है, जिसमें विद्यार्थियों को अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार विभिन्न विषयों का चयन करने का अवसर मिलता है। यह स्तर विद्यार्थियों के बौद्धिक, सामाजिक और भावनात्मक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। उच्च माध्यमिक शिक्षा का प्रमुख महत्व यह है कि यह विद्यार्थियों को उच्च शिक्षा के लिए तैयार करती है। इस स्तर पर विद्यार्थियों को विज्ञान, वाणिज्य, कला और अन्य व्यावसायिक विषयों का अध्ययन करने का अवसर मिलता है, जिससे वे अपनी रुचि और योग्यता के अनुसार अपने भविष्य के करियर का चयन कर सकते हैं। इस प्रकार यह शिक्षा विद्यार्थियों के लिए उच्च शिक्षा की आधारशिला का कार्य करती है। इसके अतिरिक्त उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान देती है। इस चरण में विद्यार्थियों की सोचने-समझने की क्षमता विकसित होती है और वे समाज, संस्कृति तथा जीवन के विभिन्न पहलुओं के प्रति जागरूक होते हैं। इस स्तर पर विद्यार्थियों को तर्कसंगत सोच, समस्या समाधान की क्षमता तथा निर्णय लेने की योग्यता विकसित करने का अवसर मिलता है, जो उनके जीवन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होती है।

उच्च माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों के सामाजिक विकास में भी सहायक होती है। इस स्तर पर विद्यार्थी विभिन्न सामाजिक गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिससे उनमें सहयोग, नेतृत्व, अनुशासन और जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। यह शिक्षा उन्हें एक जागरूक और जिम्मेदार नागरिक बनने के लिए प्रेरित करती है। इसके साथ ही उच्च माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों के व्यावसायिक विकास की दिशा भी निर्धारित करती है। इस स्तर पर प्राप्त ज्ञान और कौशल विद्यार्थियों को विभिन्न पेशेवर क्षेत्रों में आगे बढ़ने के लिए तैयार करते हैं। कई विद्यार्थी इस स्तर के बाद तकनीकी या व्यावसायिक शिक्षा की ओर भी अग्रसर होते हैं, जिससे उन्हें रोजगार के अवसर प्राप्त होते हैं। इस प्रकार उच्च माध्यमिक शिक्षा देश के आर्थिक और सामाजिक विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।

आज के आधुनिक युग में शिक्षा का महत्व पहले से कहीं अधिक बढ़ गया है। विज्ञान और प्रौद्योगिकी के विकास के साथ-साथ ज्ञान और कौशल की आवश्यकता भी बढ़ती जा रही है। ऐसे में उच्च माध्यमिक शिक्षा विद्यार्थियों को आधुनिक ज्ञान, तकनीकी समझ और प्रतिस्पर्धात्मक क्षमता प्रदान करती है, जिससे वे बदलते हुए वैश्विक परिवेश में स्वयं को स्थापित कर सकें। अतः उच्च माध्यमिक स्तर की शिक्षा विद्यार्थियों के जीवन में अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान रखती है। यह न केवल उन्हें उच्च शिक्षा के लिए तैयार करती है, बल्कि उनके व्यक्तित्व, सामाजिक चेतना और व्यावसायिक क्षमताओं के विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। इसलिए आवश्यक है कि इस स्तर की शिक्षा को अधिक प्रभावी, गुणवत्तापूर्ण और समावेशी बनाया जाए, ताकि प्रत्येक विद्यार्थी को अपनी क्षमता के अनुसार आगे बढ़ने का अवसर प्राप्त हो सके।

विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रभावित करने वाले कारक

विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनके जीवन स्तर, शैक्षिक अवसरों और समग्र विकास को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण तत्व है। सामाजिक-आर्थिक स्तर केवल परिवार की आय तक सीमित नहीं होता, बल्कि इसमें माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक स्थिति, पारिवारिक वातावरण तथा संसाधनों की उपलब्धता जैसे कई कारक सम्मिलित होते हैं। ये सभी कारक मिलकर विद्यार्थियों के जीवन की दिशा और उनके भविष्य को निर्धारित करते हैं। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के लिए सामाजिक-आर्थिक स्तर का प्रभाव विशेष रूप से महत्वपूर्ण होता है क्योंकि इसी समय उनके शैक्षिक और व्यावसायिक भविष्य की नींव रखी जाती है।

1. परिवार की आय: परिवार की आय सामाजिक-आर्थिक स्तर का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक मानी जाती है। जिन परिवारों की आर्थिक स्थिति मजबूत होती है, वे अपने बच्चों को बेहतर शिक्षा, स्वास्थ्य सुविधाएँ और आवश्यक संसाधन उपलब्ध करा सकते हैं। ऐसे परिवार अपने बच्चों को अच्छे विद्यालयों में पढ़ाने, कोचिंग कक्षाओं में भेजने, आधुनिक शिक्षण सामग्री उपलब्ध कराने तथा अन्य शैक्षिक

गतिविधियों में भाग लेने के अवसर प्रदान कर सकते हैं। इसके विपरीत जिन परिवारों की आय कम होती है, उनके बच्चों को कई बार शिक्षा से संबंधित आवश्यक सुविधाओं की कमी का सामना करना पड़ता है। कभी-कभी आर्थिक समस्याओं के कारण विद्यार्थियों को पढ़ाई के साथ-साथ कार्य भी करना पड़ता है, जिससे उनकी शैक्षिक प्रगति प्रभावित हो सकती है।

2. माता-पिता की शिक्षा: माता-पिता का शैक्षिक स्तर भी विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रभावित करने वाला महत्वपूर्ण कारक है। शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के महत्व को समझते हैं और उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित करते हैं। वे बच्चों को अध्ययन के लिए अनुकूल वातावरण प्रदान करते हैं तथा उनकी समस्याओं का समाधान करने में भी सहायता करते हैं। इसके विपरीत यदि माता-पिता शिक्षित नहीं होते, तो वे कई बार बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरी तरह समझ नहीं पाते, जिससे बच्चों की शिक्षा प्रभावित हो सकती है।

3. माता-पिता का व्यवसाय: माता-पिता का व्यवसाय भी सामाजिक-आर्थिक स्तर का एक महत्वपूर्ण संकेतक है। जिन परिवारों के माता-पिता प्रतिष्ठित और स्थायी व्यवसायों से जुड़े होते हैं, उनका सामाजिक-आर्थिक स्तर सामान्यतः उच्च होता है। ऐसे परिवारों में आर्थिक स्थिरता होती है और बच्चों को बेहतर शैक्षिक अवसर प्राप्त होते हैं। इसके विपरीत अस्थायी या कम आय वाले व्यवसायों से जुड़े परिवारों के बच्चों को आर्थिक असुरक्षा का सामना करना पड़ सकता है, जिससे उनके शैक्षिक अवसर सीमित हो सकते हैं।

4. पारिवारिक वातावरण: परिवार का वातावरण विद्यार्थियों के मानसिक और सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। यदि परिवार का वातावरण सकारात्मक, सहयोगपूर्ण और प्रोत्साहन देने वाला हो, तो विद्यार्थी पढ़ाई में अधिक रुचि लेते हैं और उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ बेहतर होती हैं। परिवार में अनुशासन, आपसी सहयोग और शिक्षा के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण बच्चों के विकास को बढ़ावा देते हैं। इसके विपरीत यदि परिवार में तनाव, अस्थिरता या शिक्षा के प्रति उदासीनता हो, तो यह विद्यार्थियों की प्रगति में बाधा बन सकती है।

5. शैक्षिक संसाधनों की उपलब्धता: घर और विद्यालय में उपलब्ध शैक्षिक संसाधन भी विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रभावित करते हैं। पुस्तकें, समाचार पत्र, कंप्यूटर, इंटरनेट, अध्ययन कक्ष, पुस्तकालय और अन्य शैक्षिक साधनों की उपलब्धता विद्यार्थियों के अध्ययन को अधिक प्रभावी बनाती है। जिन विद्यार्थियों को इन संसाधनों की पर्याप्त सुविधा मिलती है, वे अध्ययन में अधिक सफल हो सकते हैं। इसके विपरीत संसाधनों की कमी विद्यार्थियों की सीखने की प्रक्रिया को सीमित कर सकती है।

6. निवास स्थान: निवास स्थान भी विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रभावित करता है। ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों के बीच शिक्षा, स्वास्थ्य और रोजगार के अवसरों में स्पष्ट अंतर देखा जाता है। शहरी क्षेत्रों में बेहतर विद्यालय, पुस्तकालय, कोचिंग संस्थान और अन्य शैक्षिक सुविधाएँ अधिक उपलब्ध होती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में इन संसाधनों की कमी हो सकती है। इस कारण ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों को कई बार शैक्षिक अवसरों में असमानता का सामना करना पड़ता है।

7. परिवार का आकार: परिवार का आकार भी सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रभावित करने वाला एक महत्वपूर्ण कारक है। बड़े परिवारों में आर्थिक संसाधनों का वितरण अधिक सदस्यों के बीच होता है, जिससे प्रत्येक बच्चे को पर्याप्त संसाधन उपलब्ध कराना कठिन हो सकता है। इसके विपरीत छोटे परिवारों में माता-पिता अपने बच्चों पर अधिक ध्यान दे सकते हैं और उन्हें बेहतर शैक्षिक सुविधाएँ प्रदान कर सकते हैं।

8. सामाजिक और सांस्कृतिक पृष्ठभूमि: समाज की सांस्कृतिक परंपराएँ, सामाजिक मान्यताएँ और मूल्यों का भी विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर पर प्रभाव पड़ता है। कुछ समाजों और परिवारों में शिक्षा को अत्यधिक महत्व दिया जाता है, जिससे बच्चों को शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरणा मिलती है। वहीं कुछ स्थानों पर सामाजिक या सांस्कृतिक कारणों से शिक्षा को उतना महत्व नहीं दिया जाता, जिससे विद्यार्थियों की शैक्षिक प्रगति प्रभावित हो सकती है।

9. सरकारी नीतियाँ और शैक्षिक सुविधाएँ: सरकार द्वारा लागू की गई शैक्षिक नीतियाँ और योजनाएँ भी विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर को प्रभावित करती हैं। छात्रवृत्ति, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, मध्याह्न भोजन योजना, निःशुल्क शिक्षा और अन्य सहायता कार्यक्रम आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं। इन योजनाओं के माध्यम से सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने का प्रयास किया जाता है।

10. तकनीकी संसाधनों की उपलब्धता: आधुनिक युग में तकनीकी संसाधनों जैसे कंप्यूटर, इंटरनेट और डिजिटल शिक्षण सामग्री का महत्व बढ़ गया है। जिन विद्यार्थियों को इन तकनीकी संसाधनों की सुविधा मिलती है, वे नई जानकारी प्राप्त करने और आधुनिक शिक्षा पद्धतियों का लाभ उठाने में सक्षम होते हैं। इसके विपरीत जिन विद्यार्थियों के पास इन संसाधनों की कमी होती है, वे कई बार शैक्षिक प्रतिस्पर्धा में पीछे रह सकते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि का संबंध

सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के बीच गहरा और महत्वपूर्ण संबंध पाया जाता है। सामाजिक-आर्थिक स्तर से आशय किसी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक तथा आर्थिक स्थिति से होता है, जिसे सामान्यतः आय, शिक्षा, व्यवसाय और सामाजिक प्रतिष्ठा जैसे तत्वों के आधार पर मापा जाता है। दूसरी ओर शैक्षिक उपलब्धि का अर्थ विद्यार्थियों द्वारा शिक्षा के क्षेत्र में प्राप्त किए गए ज्ञान, कौशल और परीक्षा परिणामों से होता है। अनेक शोधों और अध्ययनों से यह स्पष्ट हुआ है कि सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि को प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध को समझने के लिए यह देखना आवश्यक है कि परिवार की आर्थिक और सामाजिक स्थिति विद्यार्थियों के शैक्षिक वातावरण को किस प्रकार प्रभावित करती है। जिन परिवारों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है, वे अपने बच्चों को बेहतर शैक्षिक अवसर प्रदान करने में सक्षम होते हैं। ऐसे परिवारों में बच्चों को अच्छे विद्यालयों में शिक्षा प्राप्त करने का अवसर मिलता है, साथ ही उन्हें पुस्तकें, कंप्यूटर, इंटरनेट, कोचिंग कक्षाएँ और अन्य शैक्षिक संसाधन भी उपलब्ध होते हैं। इन सुविधाओं के कारण विद्यार्थी पढ़ाई में अधिक रुचि लेते हैं और उनकी शैक्षिक उपलब्धि सामान्यतः बेहतर होती है।

इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों के विद्यार्थियों को कई प्रकार की कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आर्थिक संसाधनों की कमी के कारण उन्हें गुणवत्तापूर्ण शिक्षा प्राप्त करने के अवसर कम मिलते हैं। कई बार उन्हें आवश्यक शैक्षिक सामग्री, जैसे पुस्तकें, अध्ययन सामग्री या तकनीकी साधन उपलब्ध नहीं हो पाते। इसके अतिरिक्त कुछ विद्यार्थियों को पारिवारिक आर्थिक स्थिति के कारण पढ़ाई के साथ-साथ काम भी करना पड़ता है, जिससे उनका अध्ययन प्रभावित हो सकता है। इन परिस्थितियों के कारण उनकी शैक्षिक उपलब्धि अपेक्षाकृत कम हो सकती है।

माता-पिता की शिक्षा भी सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। शिक्षित माता-पिता अपने बच्चों की शिक्षा के महत्व को अच्छी तरह समझते हैं और उन्हें पढ़ाई के लिए प्रेरित करते हैं। वे बच्चों को उचित मार्गदर्शन प्रदान करते हैं तथा उनकी शैक्षिक समस्याओं को हल करने में सहायता करते हैं। इससे बच्चों में पढ़ाई के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण विकसित होता है और उनकी शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होता है। इसके विपरीत यदि माता-पिता शिक्षित नहीं होते, तो वे कई बार बच्चों की शैक्षिक आवश्यकताओं को पूरी तरह समझ नहीं पाते, जिससे बच्चों की शैक्षिक प्रगति प्रभावित हो सकती है। सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के पारिवारिक वातावरण को भी प्रभावित करता है, जो उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर असर डालता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों में सामान्यतः शांत, सहयोगी और अध्ययन के अनुकूल वातावरण होता है। ऐसे वातावरण में विद्यार्थी बिना किसी बाधा के अध्ययन कर सकते हैं। इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों में कई बार आर्थिक तनाव, सीमित संसाधन और अन्य सामाजिक समस्याएँ होती हैं, जो विद्यार्थियों के अध्ययन को प्रभावित कर सकती हैं।

इसके अतिरिक्त सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों की प्रेरणा, आत्म-विश्वास और आकांक्षाओं को भी प्रभावित करता है। जिन विद्यार्थियों को परिवार और समाज से पर्याप्त समर्थन मिलता है, उनमें आत्म-विश्वास अधिक होता है और वे अपने शैक्षिक लक्ष्यों को प्राप्त करने के लिए अधिक प्रयास करते हैं। वहीं जिन विद्यार्थियों को आर्थिक या सामाजिक समस्याओं का सामना करना पड़ता है, उनमें कभी-कभी आत्म-विश्वास की कमी और पढ़ाई के प्रति निराशा देखने को मिलती है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि प्रभावित हो सकती है।

निवास स्थान भी सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के संबंध में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के बेहतर अवसर, संसाधन और सुविधाएँ उपलब्ध होती हैं, जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में कई बार इन सुविधाओं की कमी होती है। इस कारण ग्रामीण क्षेत्रों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि कई बार शहरी विद्यार्थियों की तुलना में कम हो सकती है। हालांकि आजकल सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा ग्रामीण क्षेत्रों में भी शिक्षा की गुणवत्ता सुधारने के लिए कई प्रयास किए जा रहे हैं।

सरकार द्वारा चलाई जा रही विभिन्न शैक्षिक योजनाएँ भी सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। छात्रवृत्ति योजनाएँ, निःशुल्क पाठ्यपुस्तकें, मध्याह्न भोजन योजना और अन्य सहायता कार्यक्रम आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों को शिक्षा प्राप्त करने में सहायता प्रदान करते हैं। इन योजनाओं के माध्यम से यह प्रयास किया जाता है कि आर्थिक कठिनाइयों के बावजूद विद्यार्थी अपनी शिक्षा जारी रख सकें और बेहतर शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त कर सकें।

सामाजिक-आर्थिक स्तर ही शैक्षिक उपलब्धि को निर्धारित करता है। कई बार ऐसे उदाहरण भी देखने को मिलते हैं जहाँ निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों के बावजूद कड़ी मेहनत, दृढ़ संकल्प और आत्म-विश्वास के बल पर उत्कृष्ट शैक्षिक उपलब्धि प्राप्त करते हैं। इसी प्रकार कुछ उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी पर्याप्त संसाधनों के बावजूद अपेक्षित शैक्षिक सफलता प्राप्त नहीं कर पाते। इससे यह स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत प्रयास, प्रेरणा, प्रतिभा और उचित मार्गदर्शन भी शैक्षिक उपलब्धि में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं। सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक उपलब्धि के बीच घनिष्ठ संबंध है। सामाजिक-आर्थिक स्थिति विद्यार्थियों के शैक्षिक अवसरों, संसाधनों, प्रेरणा और पारिवारिक वातावरण को प्रभावित करती है, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव पड़ता है। इसलिए शिक्षा व्यवस्था में ऐसी नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित करना आवश्यक है जो सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करें और

सभी विद्यार्थियों को समान शैक्षिक अवसर प्रदान करें। इससे न केवल विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सुधार होगा, बल्कि समाज में समानता और समग्र विकास को भी बढ़ावा मिलेगा।

सामाजिक-आर्थिक स्तर का विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर प्रभाव

सामाजिक-आर्थिक स्तर किसी भी व्यक्ति या परिवार की सामाजिक और आर्थिक स्थिति को दर्शाता है। यह सामान्यतः परिवार की आय, माता-पिता की शिक्षा, व्यवसाय, सामाजिक प्रतिष्ठा तथा उपलब्ध संसाधनों के आधार पर निर्धारित किया जाता है। विद्यार्थियों के जीवन में सामाजिक-आर्थिक स्तर का विशेष महत्व होता है क्योंकि यह उनके शैक्षिक अवसरों, मानसिक विकास, व्यवहार तथा व्यक्तित्व निर्माण को गहराई से प्रभावित करता है। व्यक्तित्व विकास से आशय व्यक्ति के मानसिक, सामाजिक, भावनात्मक तथा नैतिक गुणों के समग्र विकास से है। सामाजिक-आर्थिक परिस्थितियाँ विद्यार्थियों के व्यक्तित्व के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के मानसिक और बौद्धिक विकास को प्रभावित करता है। जिन परिवारों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है, वहाँ विद्यार्थियों को अध्ययन के लिए बेहतर वातावरण, पुस्तकें, इंटरनेट, कंप्यूटर और अन्य शैक्षिक संसाधन उपलब्ध होते हैं। ऐसे वातावरण में बच्चों को नई-नई जानकारियाँ प्राप्त करने और अपने ज्ञान को विकसित करने का अवसर मिलता है। इससे उनकी सोचने-समझने की क्षमता, तर्कशक्ति और रचनात्मकता का विकास होता है। इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के परिवारों के बच्चों को अक्सर इन संसाधनों की कमी का सामना करना पड़ता है, जिससे उनके बौद्धिक विकास की गति प्रभावित हो सकती है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास और आत्म-सम्मान को भी प्रभावित करता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों के विद्यार्थियों को समाज में अधिक अवसर और प्रोत्साहन प्राप्त होता है। वे विभिन्न शैक्षिक और सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों में भाग लेते हैं, जिससे उनमें आत्म-विश्वास और नेतृत्व क्षमता विकसित होती है। इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को कभी-कभी संसाधनों की कमी या सामाजिक भेदभाव के कारण आत्म-विश्वास की कमी महसूस हो सकती है, जिससे उनके व्यक्तित्व विकास पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

पारिवारिक वातावरण भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। जिन परिवारों में सकारात्मक और सहयोगी वातावरण होता है, वहाँ के विद्यार्थी मानसिक रूप से अधिक संतुलित और आत्मनिर्भर बनते हैं। माता-पिता का प्रोत्साहन, मार्गदर्शन और स्नेह विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को मजबूत बनाता है। वहीं जिन परिवारों में आर्थिक तनाव, अस्थिरता या पारिवारिक समस्याएँ होती हैं, वहाँ के विद्यार्थियों के व्यक्तित्व पर नकारात्मक प्रभाव पड़ सकता है।

सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के सामाजिक व्यवहार को भी प्रभावित करता है। उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर वाले परिवारों के विद्यार्थियों को विभिन्न सामाजिक गतिविधियों, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और शैक्षिक अवसरों में भाग लेने का अवसर अधिक मिलता है। इससे उनमें सहयोग, नेतृत्व, संचार कौशल और सामाजिक जिम्मेदारी की भावना विकसित होती है। इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को कभी-कभी इन अवसरों से वंचित रहना पड़ता है, जिससे उनके सामाजिक अनुभव सीमित हो सकते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों की आकांक्षाओं और जीवन लक्ष्यों को भी प्रभावित करता है। जिन विद्यार्थियों को परिवार और समाज से पर्याप्त समर्थन और संसाधन मिलते हैं, वे अपने जीवन में बड़े लक्ष्य निर्धारित करने के लिए प्रेरित होते हैं। वे उच्च शिक्षा प्राप्त करने और अच्छे करियर की दिशा में प्रयास करते हैं। वहीं जिन विद्यार्थियों की आर्थिक स्थिति कमजोर होती है, वे कभी-कभी सीमित अवसरों के कारण अपने लक्ष्यों को सीमित कर लेते हैं।

सामाजिक-आर्थिक स्तर ही व्यक्तित्व विकास का एकमात्र निर्धारक नहीं है। कई बार निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थी कठिन परिस्थितियों के बावजूद अपनी मेहनत, आत्म-विश्वास और दृढ़ संकल्प के बल पर उत्कृष्ट व्यक्तित्व का विकास कर लेते हैं। इसी प्रकार कुछ उच्च सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों में भी उचित मार्गदर्शन या प्रेरणा की कमी के कारण व्यक्तित्व विकास अपेक्षित स्तर तक नहीं हो पाता। इससे स्पष्ट होता है कि व्यक्तिगत प्रयास, पारिवारिक समर्थन, विद्यालयी वातावरण और सामाजिक अवसर भी व्यक्तित्व विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं।

वर्तमान समय में शिक्षा के माध्यम से विद्यार्थियों के समग्र विकास पर विशेष बल दिया जा रहा है। विद्यालयों में विभिन्न सह-पाठ्यक्रम गतिविधियों, खेलकूद, सांस्कृतिक कार्यक्रमों और व्यक्तित्व विकास कार्यक्रमों के माध्यम से विद्यार्थियों को अपने कौशल और प्रतिभा को विकसित करने का अवसर प्रदान किया जा रहा है। सरकार और विभिन्न संस्थाओं द्वारा आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों को भी समान अवसर प्रदान करने के लिए छात्रवृत्ति, निःशुल्क शिक्षा सामग्री और अन्य सहायता कार्यक्रम संचालित किए जा रहे हैं। सामाजिक-आर्थिक स्तर विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास को महत्वपूर्ण रूप से प्रभावित करता है। यह उनके मानसिक विकास, आत्म-विश्वास, सामाजिक व्यवहार और जीवन लक्ष्यों को आकार देता है। इसलिए यह आवश्यक है कि शिक्षा व्यवस्था में ऐसी नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित किए जाएँ जो सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान करें। इससे प्रत्येक विद्यार्थी अपनी क्षमता के अनुसार अपने व्यक्तित्व का समुचित विकास कर सकेगा और समाज के विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे सकेगा।

निष्कर्ष

उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उनकी शैक्षिक प्रगति, प्रेरणा और व्यक्तित्व विकास पर महत्वपूर्ण प्रभाव डालता है। जिन विद्यार्थियों का सामाजिक-आर्थिक स्तर उच्च होता है, उन्हें बेहतर शैक्षिक संसाधन, अनुकूल वातावरण और विविध अवसर प्राप्त होते हैं, जिससे उनकी शैक्षिक उपलब्धियाँ सामान्यतः बेहतर होती हैं। इसके विपरीत निम्न सामाजिक-आर्थिक स्तर के विद्यार्थियों को संसाधनों की कमी, आर्थिक दबाव और पारिवारिक जिम्मेदारियों के कारण कई चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। इसलिए शिक्षा प्रणाली में ऐसी नीतियाँ और कार्यक्रम विकसित करना आवश्यक है जो सभी विद्यार्थियों को समान अवसर प्रदान कर सकें। आर्थिक रूप से कमजोर वर्गों के विद्यार्थियों के लिए छात्रवृत्ति, शैक्षिक सहायता, मार्गदर्शन तथा संसाधनों की उपलब्धता सुनिश्चित की जानी चाहिए। इससे वे भी अपनी क्षमता के अनुसार शिक्षा प्राप्त कर सकेंगे और समाज के विकास में योगदान दे सकेंगे। सामाजिक-आर्थिक असमानताओं को कम करके ही शिक्षा को अधिक समावेशी और प्रभावी बनाया जा सकता है। यदि सभी विद्यार्थियों को समान अवसर और समर्थन प्राप्त हो, तो शिक्षा समाज में समानता, प्रगति और समृद्धि की दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकती है।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. अग्रवाल, जगदीश चंद्र. (2010). सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का अध्ययन. भारतीय शैक्षिक अनुसंधान पत्रिका, 12(2), 45–52।
2. गुप्ता, श्याम प्रसाद. (2013). सामाजिक-आर्थिक स्थिति और माध्यमिक शिक्षा में शैक्षिक सफलता. भारतीय शिक्षा समीक्षा, 15(3), 60–68।
3. चौधरी, दिनेश कुमार. (2019). सामाजिक-आर्थिक असमानता और शिक्षा में अवसरों की उपलब्धता. समाज और शिक्षा पत्रिका, 14(1), 65–72।
4. तिवारी, अशोक कुमार. (2020). विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में सामाजिक-आर्थिक कारकों का प्रभाव. भारतीय सामाजिक विज्ञान जर्नल, 16(2), 50–58।
5. त्रिपाठी, सुरेंद्र कुमार. (2022). सामाजिक-आर्थिक स्थिति और विद्यार्थियों के करियर अभिविन्यास का अध्ययन. आधुनिक शिक्षा अनुसंधान जर्नल, 18(2), 41–49।
6. पांडेय, शिवकुमार. (2017). उच्च माध्यमिक स्तर पर विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि का तुलनात्मक अध्ययन. भारतीय शिक्षा अध्ययन जर्नल, 11(3), 40–48।
7. मिश्रा, सुरेश चंद्र. (2015). ग्रामीण विद्यार्थियों के सामाजिक-आर्थिक स्तर और शैक्षिक विकास का अध्ययन. ग्रामीण शिक्षा अनुसंधान जर्नल, 7(1), 21–29।
8. यादव, रामबाबू. (2018). सामाजिक-आर्थिक स्तर और विद्यार्थियों की अध्ययन आदतों का संबंध. शिक्षा मनोविज्ञान जर्नल, 6(2), 30–37।
9. वर्मा, राजेंद्र कुमार. (2016). सामाजिक-आर्थिक पृष्ठभूमि और विद्यार्थियों के आत्म-विश्वास का संबंध. आधुनिक शिक्षा शोध पत्रिका, 9(2), 55–63।
10. शर्मा, रामनाथ. (2012). विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास पर पारिवारिक पृष्ठभूमि का प्रभाव. शिक्षा और समाज जर्नल, 8(1), 33–40।
11. शुक्ला, रमेश चंद्र. (2021). माध्यमिक विद्यालयों के विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि पर पारिवारिक आय का प्रभाव. शिक्षा विकास पत्रिका, 13(1), 27–34।
12. सिंह, महेंद्र प्रताप. (2014). विद्यार्थियों की शैक्षिक उपलब्धि में सामाजिक-आर्थिक कारकों की भूमिका. मखालीन शिक्षा पत्रिका, 10(2), 72–80।